सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का चतुर्थ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् पंडित महेश दत्त शर्मा 'गुरुजी'द्वारा लिखित और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेइ सर्व सुख करई' लेख में श्री हनुमान के देवत्व एवं दिव्यत्व के रहस्य को प्रतिपादित करते हुए उनकी रामभक्ति के आदर्श को अभिनन्दनीय एवं वन्दनीय बतलाया है। प्रो. (डॉ.) सरोज कौशल द्वारा लिखित 'रामचरितमानस में मंगलाचरण' शीर्षक शोधलेख में रामचरितमानस में मंगलाचरण के वैशिष्ट्य को पौराणिक मान्यताओं के आधार पर प्रामाणिक बतलाते हुए उसमें निहित गूढ़ रहस्य का प्रतिपादन किया गया है। डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'सप्तप्राणात्मकम् अध्यात्मसंस्थानम्' शोधलेख में प्राणिशरीर में विद्यमान इन्द्रियों की सक्रियता एवं अन्तः प्रक्रियाओं के संचालक प्राण तत्त्व के वैविध्य का वेदविज्ञानानुसार प्रस्तुतिकरण किया गया है। तत्पश्चात् बालकृष्ण एम. दवे द्वारा लिखित 'वैदिकयज्ञानामपर्यावरणीयं महत्त्वम्' शोधलेख में पर्यावरण शोधन एवं संरक्षण के विषय में वैदिक यज्ञों की उपयोगिता दर्शायी गयी है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा